डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15,मई 2020
वर्षः 03, अंक–07

चुनौतियों को अवसर के रूप में बदलना होगा : प्रो0 दीक्षित 03

भारत की जनसंख्या अर्थव्यवस्था के लिए बड़ी चुनौती है : प्रो0 राव 04

मीडिया को नैतिक मूल्यों पर ध्यान देने की आवश्यकता हैः कुलपति

07 मई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग एवं तकनीकी संस्थान के संयुक्त संयोजन में "कोविड–19 की महामारी में मास मीडिया की भूमिका" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया।

वेबिनार के उद्घाटन सत्र में स्वागत उद्बोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के दौरान वर्चुअल प्लेटफॉर्म का प्रयोग आवश्यक हो गया है। इस महामारी ने कार्य संस्कृति को पूरी तरह से बदल दिया है। वर्तमान महामारी कोविड–19 के दौरान विश्वभर की सूचनाओं को जन–जन तक आज मीडिया ही पहुंचा रही है। मीडिया के कारण इस महामारी की वास्तविक स्थिति का आकलन संभव हो पा रहा है। पल–पल चिकित्सा विशेषज्ञों की सलाह, चिकित्सालयों की स्थिति एवं मरीजों की स्थिति से मीडिया के कारण जनमानस परिचित हो पा रहा है। प्रो0 दीक्षित ने कहा कि मीडिया में टीआरपी की होड़ चिंताजनक है। सूचनाओं और समाचारों में परख होनी आवश्यक है और मीडिया को नैतिक मूल्यों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। समाज के बीच भय पैदा करने वाली खबरों का प्रसारण नहीं किया जाना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे इंडियन फेडरेशन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट, नई दिल्ली के अध्यक्ष के0 विक्रम राव ने कहा कि मीडिया ने कोविड–19 की गंभीरता को आम जनमानस के समक्ष प्रस्तुत कर सजग किया है। निश्चित रूप से विश्वभर का मीडिया कंधे से कंधा मिलाकर चल रहा है। वर्तमान परिस्थिति वार रिपोर्टिंग जैसी हो गई है। यह समय मीडिया के संयम एवं सक्षम होने का है। उन्होंने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन सजगता से न करके पूरी दुनिया को एक मुश्किल में डाल दिया है। यदि समय के रहते मीडिया एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन के मध्य संयोजन व्यापक रूप से हुआ होता तो निश्चित रूप से इतने बड़े पैमाने पर जनहानि न होती।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्कूल ऑफ मार्डन मीडिया, यू0पी0ई0एस0 के अधिष्ठाता एवं आई0आई0एम0सी0, नई दिल्ली के पूर्व महानिदेशक प्रो0 के0जी0 सुरेश ने कहा कि इस महामारी के दौरान मीडिया कोविड–19 योद्धाओं के साथ अग्रिम पंक्ति में खड़ा है। लोगों को शिक्षित करना, मजदूर व बेसहारा लोगों के हितों के लिए सरकार एवं जनमानस को जागरूक करने का दायित्व मीडिया निर्वहन कर रहा है। प्रो0 सुरेश ने कहा कि वर्तमान परिवेश में नागरिक पत्रकारिता से बचाव की आवश्यकता है। सभी को पत्रकार बनने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। पत्रकारिता एक विधा है इसका प्रशिक्षण एवं सामान्य विषयों का मौलिक ज्ञान होना आवश्यक है। मीडिया संस्थान जनमत का निर्माण करते है।

वेबिनार के मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक शेष नारायण सिंह ने कहा कि मीडिया यदि अपनी भूमिका का निर्वहन ठीक से नहीं कर पाया तो इसके परिणाम घातक होंगे। समाचारों में सत्य के सिवा कुछ नहीं होना चाहिए। राजनेता की टिप्पणियों में मीडिया कर्मी को शामिल नहीं होना चाहिए। मीडिया कर्मी को वैकल्पिक सत्य से परहेज करना होगा। चीनी मीडिया पर टिप्पणी करते हुए श्री सिंह ने कहा कि चीनी मीडिया नियंत्रित मीडिया है। मीडिया को स्वधर्म का पालन करना होगा और धूप सी सच्चाई को

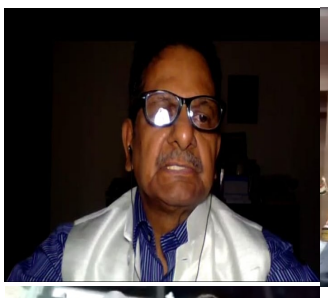

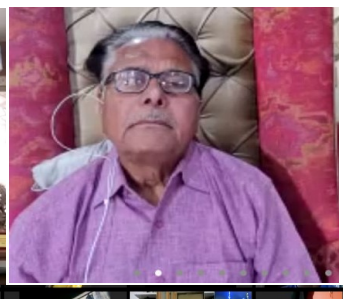
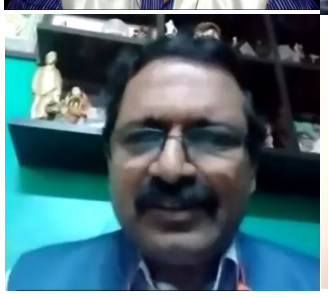
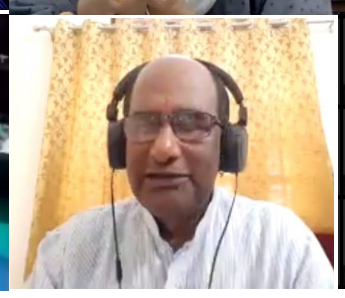
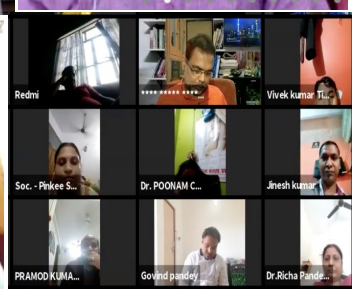

उजागर करना होगा। समापन सत्र के मुख्य अतिथि, उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, प्रयागराज के अध्यक्ष प्रो0 ईश्वर शरण विश्वकर्मा ने कहा कि जीवन को आरोग्यता की ओर ले जाने का कार्य मीडिया का है। इस महामारी के निदान के संन्दर्भ में विश्वभर के विशेषज्ञों की राय को जनमानस के समक्ष प्रस्तुत करने का दायित्व मीडिया का है। मीडिया ने भौगोलिक दूरियों को समेट दिया है। मीडिया के सहयोग से कोई भी व्यक्ति आइसोलेट नहीं है बल्कि वह पूरे विश्व से जुड़ा है। जंगलों में भी बैठा हुआ व्यक्ति इस महामारी की सूचना से लैस है। इस समय मानवता की रक्षा का कार्य मीडिया कर रहा है। एक संदेश वाहक के रूप में मीडिया लॉकडाउन के दौरान सोशल डिस्टेंसिंग, आहार, दिनचर्या जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञों की राय का प्लेटफॉर्म सुलभ कर रहा है।

हिन्दुस्थान समाचार के पूर्व प्रधान संपादक एवं सी0ई0ओ0 राकेश मंजुल ने कहा कि मीडिया की भूमिका का निर्धारण स्पष्ट करना होगा कि मीडिया समाजोन्मुख या राज्योन्मुख है। यह तय करना होगा कि मीडिया अपने किन उत्तदायित्वों का निर्वहन करे। वर्तमान परिवेश में प्रिंट मीडिया विजुअल मीडिया की तरह कार्य कर रहा है। मीडिया को अभी तक इस शताब्दी में दो विश्व युद्धों का ज्ञान है। इस महामारी ने मीडिया के समक्ष कई नई चुनौतियों को जन्म दिया है। भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है, इस पर मीडिया को एकरसता के साथ कार्य करना होगा ताकि मीडिया पर कोई महामारी न आये।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के जनसंचार एवं पत्रकारिता के विभागाध्यक्ष प्रो0 गोविन्द जी पाण्डेय ने कहा कि आज के समय में वेबिनार का यह विषय अत्यंत सार्थक है। मीडिया का रोल इस दौरान बड़ा महत्वपूर्ण रहा और कोविड–19 के दौर के बाद मीडिया की भूमिका और महत्वपूर्ण हो जायेगी। उन्होंने मीडिया के लिए क्वालिटी इनफॉर्मेशन उपलब्ध कराने की बात कही।

लखनऊ विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार के विभागाध्यक्ष प्रो0 मुकुल श्रीवास्तव ने बताया कि आज सूचना एवं समाचार के बीच अन्तर खत्म हो गया है, जो बहुत बड़ा संकट है। इससे फेक न्यूज की समस्या उत्पन्न हुई है। पत्रकारों में आईडेंटिटी क्राइसिस की समस्या आ रही है।

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के जनसंचार के विभागाध्यक्ष डॉ0 मनोज मिश्र ने बुद्ध के उपदेश के माध्यम से बताया कि किसी चीज पर विश्वास करने से पूर्व उसका विश्लेषण एवं परीक्षण आवश्यक है। इसके पश्चात ही जो हितकारी हो उस पर दृढ़ रहें और अपना मागदर्शक बनाएं। यही बात समाचार पत्रों के लिए भी है। प्रो0 मिश्र ने बताया कि इस महामारी में पत्रकार और हॉकर्स जान जोखिम में डालकर सूचनाएं हम तक पहुंचा रहे हैं। हमें मीडिया की इस भूमिका का स्वागत करना होगा।

विश्वविद्यालय के आई0क्यू0ए0सी0 के निदेशक प्रो0 अशोक शुक्ल ने बताया कि मीडिया को इन्फॉर्मेटिव होना चाहिए। सारी आलोचनाओं को किनारे रखकर अपने विवेक का इस्तेमाल करना चाहिए। उन्होंने पत्रकारिता के लिए स्वतंत्र, यथार्थ और निष्पक्ष होने के साथ–साथ जवाबदेही भी आवश्यक बताया। डॉ0 आशिमा सिंह, एमिटी यूनिवर्सिटी नोएडा, ने बताया कि इस महामारी में महिला पत्रकारों को भी आगे आना होगा। पेनडेमिक से ज्यादा बड़ी समस्या इंफोडेमिक होती जा रही है। कन्फर्मेशन बायस से बचना चाहिए।

राष्ट्रीय वेबिनार के तकनीकी सत्र में हिडेन वुड्स ट्रेल ओहियो, यू0एस0ए0, के कीर्ति एस0 श्रीवास्तव, सीनियर प्रोजेक्ट इंजीनियर, क्वीन मेरी यूनिवर्सिटी, लंदन की डॉ0 शिवानी तनेजा, लखनऊ दूरदर्शन के एंकर एवं वरिष्ठ पत्रकार हेमेन्द्र तोमर, राष्ट्रीय सहारा नई दिल्ली के वरिष्ठ पत्रकार डॉ0 अरूण पाण्डेय, आई0टी0एम0आई0, इण्डिया टूडे ग्रुप नई दिल्ली, के सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर अभिषेक श्रीवास्तव, बद्री विशाल डिग्री कालेज, फर्रुखाबाद की डॉ0 अर्चना पाण्डेय और वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के डॉ0 दिग्विजय सिंह ने भी अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती वंदना से किया गया। विश्वविद्यालय के कुलगीत की डिजिटल प्रस्तुति की गई तथा विश्वविद्यालय के विकास यात्रा की डाक्यूमेंट्री प्रस्तुति की गई। वेबिनार में देश व विदेश से 679 प्रतिभागियों ने गूगल फॉर्म को भरकर अपना पंजीकरण कराया। ऑनलाइन वीडियो कांफ्रेंसिंग में 300 लोगों ने प्रतिभाग किया एवं अन्य यू–ट्यूब एवं फेसबुक से लाइव रहे।

कार्यक्रम का संचालन वेबिनार के संयोजक डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी ने किया। अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन आयोजन सचिव डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा द्वारा किया गया। सह आयोजन सचिव डॉ0 आरएन पाण्डेय ने रिपोर्टियर प्रस्तुत किया। वेबिनार के संचालन में सह आयोजन सचिव डॉ0 अनिल कुमार विश्वा, इं0 पारितोष त्रिपाठी, इं. रमेश मिश्र की सक्रिय भूमिका रही। वेबिनार में शिक्षकों, शोधार्थियों एवं छात्र–छात्राओं की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

खादी ग्रामोद्योग को बहुराष्ट्रीय निगम में परिवर्तित करना होगाः प्रो0 गोयल

30 अप्रैल। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास, दृश्य कला एवं आई0ई0टी0 संस्थान के संयुक्त संयोजन में "इम्पैक्ट ऑफ कोरोना ऑन इंडियन इकोनॉमी विथ रिफरेंस टू ग्लोबल स्लोडाउन" विषय पर 29–30 अप्रैल, 2020 को दो दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया।

वेबिनार के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा के कुलपति प्रो0 अशोक कुमार मित्तल ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास की दर पहले ही कम थी, कोरोना महामारी के कारण यह विकास दर और कम होती जा रही है। यह चिन्ता का विषय है, इससे बेरोजगारी, भुखमरी, पर्यटन, व्यापार क्षेत्र तथा अन्य क्षेत्र प्रभावित हुए हैं। जब तक इसकी वैक्सीन तैयार न हो जाए, तब तक अर्थव्यवस्था में सामान्य स्थिति नहीं आ पायेगी।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि जे0एन0 विश्वविद्यालय, जयपुर के पूर्व कुलपति प्रो0 एम0एम0 गोयल ने कहा कि पोस्ट कोविड युग में सरकार ने अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने के लिए कॉरपोरेट क्षेत्र के लिए जो उपाय किए हैं, उनके साथ अन्य क्षेत्रों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। प्रो0 गोयल ने कहा कि हमें खादी ग्रामोद्योग को बहुराष्ट्रीय निगम में परिवर्तित करना होगा, जो कि भारत की जुड़वा बहनें गरीबी और बेरोजगारी को पूरी तरह समाप्त करने की क्षमता रखती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने आह्वान किया कि प्राचीन भारतीय पद्धति जिसमें आर्युवेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा के आर्थिक मॉडलों को अर्थशास्त्रियों द्वारा तैयार करना चाहिए, जिससे देश की अर्थव्यवस्था आत्म निर्भर बने। प्रो0 दीक्षित ने कहा कि कोविड–19 से उत्पन्न अर्थव्यवस्था के संकट से निकलने के लिए नए मॉडल की आवश्यकता है। लॉकडाउन में भारतीय अर्थव्यवस्था को सुचारुरूप से चलाने के लिए छोटे–छोटे उद्यमियों को आगे आना पड़ेगा, जिससे लोगों को रोजगार उपलब्ध हो सकेगा।

कुमाऊं विश्वविद्यालय नैनिताल के पूर्व कुलपति प्रो0 डी0के0 नौटियाल ने बताया कि कोविड–19 का प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर पड़ रहा है। वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में भारत को पैनी निगाह रखनी होगी। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ के पूर्व कुलपति प्रो0 एन0एम0पी0 वर्मा ने समष्टि अर्थशास्त्र के विभिन्न आयामों को देखते हुए आय, रोजगार, उपभोग एवं निवेश के साथ–साथ गुणवत्ता प्रभाव का विश्लेषण प्रस्तुत किया। मणिपुर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो0 ए0पी0 पाण्डेय ने कहा कि हमारी अर्थव्यवस्था का प्राण कृषि है। वैश्विक महामारी का सबसे कम प्रभाव इसी पर पड़ा है। अवध विश्वविद्यालय के पूर्व कुल. पति प्रो0पी0के0 सिन्हा ने मनरेगा की मजदूरी बढ़ाने एवं सार्वजनिक वितरण प्रणाली की मात्रा बढ़ाने की बात की।

वेबिनार में तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। तकनीकी सत्र में प्रो0 शक्ति कुमार, प्रो0 एस0एस0 यादव एवं डॉ0 विजय सिंह ने भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं एवं उनके समाधान पर प्रकाश डाला। वेबिनार का संचालन, स्थानीय आयोजन सचिव प्रो0 विनोद कुमार श्रीवा. स्तव एवं स्थानीय सह आयोजन सचिव प्रो0 रमापति मिश्र द्वारा किया गया। प्रो0 आशुतोष सिन्हा ने अतिथियों का स्वागत किया एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर वेबिनार की संयोजक, अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग की प्रो0 मृदुला मिश्रा, डॉ0 प्रिया कुमारी, डॉ0 प्रदीप त्रिपाठी, एवं बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं एवं शोधार्थी ऑनलाइन जुड़े रहे।

मंथन
15 मई, 2020: ज्येष्ठ, कृष्ण पक्ष, अष्टमी, विक्रम संवत् 2077
'हर इंसान अपने स्वास्थ्य या बीमारी का लेखक है'

महामारी से बचाव का मूलमंत्र

आज पूरा विश्व कोविड–19 महामारी से जूझ रहा है। दिसम्बर, 2019 में चीन के वुहान से निकला यह वायरस, आज पूरे विश्व को अपनी चपेट में ले चुका है। विश्व भर में कोरोना वायरस से लगभग 50 लाख लोग पीड़ित हैं। भारत में कोरोना का पहला मामला 30 जनवरी 2020 को केरल राज्य में आया था। आज भारत में कोरोना वायरस से पीड़ित व्यक्तियों की संख्या एक लाख से ज्यादा हो चुकी है। भारत की दृष्टि से देखें तो यह मामला और गंभीर है। भारत सघन जनसंख्या आबादी वाला देश है, जिससे इस बीमारी के फैलने के आसार ज्यादा हैं। सावधानी ही इस बीमारी से बचाव का उपाय है। सबकी सुरक्षा के लिए जरूरी है, आपस में एक से दो मीटर की दूरी, साबुन या हैंडसैनेटाइजर का प्रयोग, आंख, नाक एव चेहरे को छूने से पहले हाथों को धोना आदि। जब तक इस बीमारी की दवा नहीं आती, तब तक बचाव के नियमों का कड़ाई से पालन करना होगा। प्रधानमंत्री ने भी अपने सम्बोधन में दो गज दूरी की बात की है। लेकिन अभी देखने में आ रहा है कि जिस प्रकार दिल्ली, महाराष्ट्र, हरियाणा, पंजाब एवं दक्षिण भारत के राज्यों से श्रमिकों का पलायन हो रहा है, वह चिंताजनक स्थिति है। आवागमन की उचित व्यवस्था न होने से और जल्द से जल्द अपनों के पास पहुंचने की चाहत में लोग बचाव के नियमों का पालन नहीं कर रहे है। अगर यह बीमारी गांवों में चली गयी, तो स्थिति और भी भयानक हो सकती है। विश्व के साथ–साथ भारत में भी कोरोना वायरस की वजह से पूरी व्यवस्था अस्त–व्यस्त हो चुकी है। कोरोना ने लोगों को घरों में रहने को विवश कर दिया है। कोरोना वायरस ने लोगों की दिनचर्या व कार्यपद्धति को भी बदल दिया है। सरकार ने लॉकडाउन कर दिया, फलस्वरूप आवागमन अवरूद्ध है। लॉकडाउन ने वर्क फ्रॉम होम संस्कृति को बढ़ावा दिया है। चाहे सरकारी कर्मचारी, शिक्षक या अन्य कोई हो, आजकल वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से मीटिंग, वेबिनार तथा कक्षाएं संपादित हो रही है। कोरोना वायरस जहाँ एक तरफ मानव जाति के लिए खतरा बना हुआ है, वहीं पर्यावरण की दृष्टि से देखें तो लॉकडाउन की वजह से प्रदूषण की रफ्तार कम हुई है। भारत की दृष्टि से देखें तो विगत माह से बस, ट्रेन, हवाई जहाज सेवाएं सीमित हैं और कल–कारखाने आदि बंद हैं। इनसे निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों पर रोक लगी है ।

भारत के बोध और आत्मबोध का प्रतीक हैं महात्मा बुद्ध

स्वाति खरे

हर मास की पूर्णिमा एक विशेष महत्व रखती है, परन्तु वैशाख मास की पूर्णिमा मानवता के लिए एक विशेष संदेश है। हम सभी इस दिन को बुद्ध पूर्णिमा के नाम से जानते हैं और इसे पूरे हर्षोलास से मनाते हैं। यह दिन महात्मा बुद्ध के जीवन दर्शन के चिंतन का दिन है।

बुद्ध पूर्णिमा के दिन ही गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था। इसी दिन उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई थी और इसी दिन उनका महापरिनिर्वाण भी हुआ था। राजकुमार सिद्धार्थ का जन्म लुंबिनी में 563 ई0 पूर्व इक्ष्वाकु वंशीय क्षत्रिय शाक्य कुल के राजा शुद्धोधन के घर में हुआ था। युवा अवस्था में ही सिद्धार्थ अपनी पत्नी यशोधरा, नवजात पुत्र राहुल और समस्त राजसी भोग–विलास को त्याग कर अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर अग्रसर हो गए। सात वर्षों के अथक वनवास और योग तप के उपरान्त 34 वर्ष की आयु में महात्मा ने बिहार के गया में महाबोधि वृक्ष के नीचे परमज्ञान तत्व को प्राप्त किया। उन्होंने सिद्ध किया कि निर्वाण ही जीवन का अंतिम सत्य है। बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर पूरे विश्व में बौद्ध भिक्षु और आम जन बुद्ध भगवान को याद करते हुए उत्सव मनाते हैं। इस दिन लोग अपने घरों में और बौद्ध मन्दिरों में पूजा करते हैं, दीप जलाते हैं, फूलों से सजावट करते हैं और संसार में शांति हेतु कामना करते हैं। इस दिन महाबोधि वृक्ष के दर्शन और दूध, जल, फल–फूल आदि से पूजन का भी विधान है। इस पावन दिवस पर महात्मा बुद्ध के अनुयायी, उनके बताए हुए अष्टांग मार्ग और चार आर्य सत्य को अपनाते हैं और संगोष्ठियों आदि के माध्यम से समस्त विश्व को बौद्धिक विचारों से दीप्तमान करते हैं। आज के दिन धर्मशाला के मैकलोडगंज, बोधगया, श्रावस्ती, लुम्बिनी और देश–विदेश में उत्सव का आयोजन किया जाता है और दान–पुण्य की परम्परा का निर्वहन किया जाता है।

आजकल जब आतंकवाद दीमक की भांति संपूर्ण विश्व को अपना ग्रास बना रहा है। पूरा विश्व हथियारों की दौड़ में भागता जा रहा है और सर्वत्र हिंसा का बोलबाला है। ऐसे समय महात्मा बुद्ध की शरण ही सर्व कल्याणकारी प्रतीत होती है। ऐसे में संसार को सिद्धार्थ के करुणामयी व्यक्तित्व को आत्मसात करने की आवश्यकता है। साथ ही महात्मा बुद्ध के उपदेशों को अपने जीवन में उतारने की भी जरूरत है। यह पर्व सभी धर्म, पंथ, जातियों को सौहार्द का संदेश और मानवतावादी मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए एक मंच देता है और हमें आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। एक कार्यक्रम के सम्बोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि बुद्ध भारत के बोध और भारत के आत्मबोध, दोनों का प्रतीक हैं। उन्होंने कहा कि इसी आत्मबोध के साथ भारत निरंतर पूरी मानवता एवं पूरे विश्व के हित में काम कर रहा है और करता रहेगा।

जरूरत है आज के इस कोरोना काल में दृढ़ निश्चय कर महात्मा बुद्ध के उपदेशों को आत्मसात करें और संयम एवं करुणा का परिचय देकर देश को इस विपदा की घड़ी से उबरने में अपना योगदान करें।

हिन्दी पत्रकारिता और उदन्त मार्तण्ड

सर्वेश श्रीवास्तव

'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' लक्ष्य के साथ 30 मई 1826 को भारत में हिंदी पत्रकारिता की नींव रखी गई। पत्रकारिता के अधिष्ठाता देवर्षि नारद की जयंती प्रसंग (वैशाख कृष्ण पक्ष, द्वितीय) पर हिंदी के पहले समाचार–पत्र उदन्त मार्तण्ड का प्रकाशन समाज हित व राष्ट्रहित में पंडित युगल किशोर शुक्ल द्वारा शुरू हुआ। अधिसंख्य समाचार–पत्र आजादी के आंदोलन के बेहतरीन माध्यम बने और इतिहास साक्षी है कि वे स्वतंत्रता आंदोलन में अंग्रेजी सरकार के खिलाफ मुखर विरोधी रहे। यही रुख उदन्त मार्तण्ड ने भी अपनाया। उदन्त मार्तण्ड के अंतिम अंक में एक नोट प्रकाशित हुआ था, जिसमें इसके बंद होने की पीड़ा झलकती है। वह इस प्रकार थाः "आज दिवस लौ उग चुक्यौ मार्तण्ड उदन्त, अस्ताचल को जात है दिनकर दिन अब अंत।"

भले ही 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन बंद हो गया, लेकिन यह समाचार पत्र हिंदी पत्रकारिता की आधारशिला रख चुका था। 'उदन्त मार्तण्ड' के प्रथम प्रकाशन के दिन, 30 मई को हर वर्ष भारत में 'हिंदी पत्रकारिता दिवस' के रूप में मनाया जाता है। जिनकी वजह से हिंदी पत्रकारिता की मशाल आज तक रोशन है। इसे बुझाने की हजारों बार कोशिश हुई पर जिस प्रकार सूरज का उगना बन्द नहीं हुआ, अंधेरे से लड़ने की जरूरत खत्म नहीं हुई, उसी तरह हिंदी पत्रकारिता भी अपना सफर तय करती रही, आगे भी करती रहेगी।

आज भारत में हिंदी के समाचार–पत्र सबसे अधिक पढ़े जा रहे हैं। प्रचुर संख्या सहित विश्वसनीयता की दृष्टि से शीर्ष पर हिंदी के समाचार–पत्र ही हैं। परंतु वर्तमान में बाजार और राजनीतिक दबाव के बोझ तले आधुनिक पत्रकारिता दब कर रह गई है। व्यक्तिगत तौर पर हम कह सकते हैं कि जब तक अंश मात्र भी देशहित पत्रकारिता की प्राथमिकता में है, तब तक ही पत्रकारिता जीवित है। अन्यथा यह पत्रकारिता नहीं है। यहीं समय है अपनी पत्रकारिता की प्राथमिकताओं पर मंथन करने का और समय के थपेड़े के साथ राजनैतिक विसंगतियों को दूर करने का। आज समाचार–पत्रों या कहें कि संपूर्ण पत्रकारिता यानी लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को अपना अस्तित्व बनाए रखने की अत्यंत आवश्यकता है और उदंत मार्तंड के उद्देश्य को व्यवहार में लाना होगा।

पत्रकारिता का मूल लक्ष्य है समाज सुधार एवं जनकल्याण

आरती तिवारी

लोकतंत्र के लिए जितनी जरूरत स्वस्थ राजनीति की है, उतनी ही जरूरत स्वतंत्र पत्रकारिता की है। पत्रकारिता लोकतंत्र का चतुर्थ स्तंभ है, भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में प्रेस की स्वतंत्रता एक मौलिक जरूरत है। पत्रकारिता का मूल लक्ष्य समाज सुधार और जनकल्याण है। प्रेस की स्वतंत्रता संविधान के अनुच्छेद–19 में भारतीयों को दिए गए अभिव्यक्ति की आजादी के मूल अधिकार से सुनिश्चित होती है। विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस मनाने का निर्णय 1991 में यूनेस्को और संयुक्त राष्ट्र के जनसूचना विभाग ने मिलकर किया था। वर्ष 1993 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में यूनेस्को महासम्मेलन के 26वें सत्र में 3 मई को अंतर्राष्ट्रीय प्रेस स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य दुनिया भर में स्वतंत्र पत्रकारिता का समर्थन करना और साथ ही प्रेस की आजादी के लिए शहीद हुए पत्रकारों को याद करना है।

यूनेस्को द्वारा 1997 से प्रत्येक वर्ष विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर गिलर्मो कैनो वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम प्राइज दिया जाता है। यह पुरस्कार ऐसे व्यक्ति, संगठन या संस्था को सम्मानित करता है, जिसने दुनिया में कहीं भी प्रेस की आजादी की रक्षा या उसके उन्नयन में उत्कृष्ट योगदान दिया है। "बिना डर या पक्षपात के पत्रकारिता" (Journalism Without Fear or Favour) थीम को इस बार के विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस के लिए चुना गया है। इसका मुख्य उद्देश्य निर्भीक होकर चुनौतियों का सामना करना और साथ–साथ शांति और सुलह प्रक्रियाओं का समर्थन करना है।

विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस का उद्देश्य प्रेस की आजादी के महत्व के प्रति जागरूकता फैलाना है। साथ ही प्रेस की आजादी और समाचारों को लोगों तक पहुंचाकर, मीडियाकर्मियों के हौसलों का समर्थन करना है। संकट के समय में सटीक और विश्वसनीय पत्रकारिता के महत्व को समाप्त नहीं किया जा सकता है फिर भी 1993 से अबतक लगभग 1400 पत्रकारों को कर्तव्य परायणता की वजह से मार दिया गया। हाल के उदाहरणों से पता चलता है कि यूरोप सहित दुनिया भर के पत्रकारों को संवेदनशील विषयों जैसे कोविड–19 महामारी पर रिपोर्टिंग के दौरान हिंसा का शिकार होना पड़ा है। स्वतंत्र पत्रकारिता को सुरक्षित करना और बिना किसी भय या पक्षपात के पत्रकारिता को सुनिश्चित करना लोकतंत्र के जीवित रहने के लिए आवश्यक है।

मीडिया की आजादी का मतलब है कि किसी भी व्यक्ति को अपने विचार कायम रखने और सार्वजनिक तौर पर इसे प्रकट करने का अधिकार है। भारत जैसे विकासशील देशों में मीडिया पर असमानता एवं साम्प्रदायिकता जैसे संकुचित विचारों के खिलाफ संघर्ष करने और गरीबी तथा सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ाई में लोगों की सहायता करने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

लोगों का एक बहुत बड़ा वर्ग पिछड़ा और अनभिज्ञ है। इसलिए यह और भी जरूरी है कि आधुनिक विचारों को उन तक पहुंचाया जाए, उनका पिछड़ापन दूर किया जाए, ताकि वे सजग भारत का हिस्सा बन सकें।

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अवध अभिव्यक्ति विश्वविद्यालय परिसर के कियाकलापों का दर्पण है। आम्बेडकर और ज्योतिबा फुल पर लेख बहुत ही रूचिकर एवं तथ्यपरक रहे।

–संजय शुक्ला

सुविचार

सत्य बिना जन समर्थन के भी खड़ा रहता है, वह आत्मनिर्भर है।

–महात्मा गांधी

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 मनोज दीक्षित, कुलपति
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, समन्वयक
प्रकाशक
रामचन्द्र अवस्थी, कुलसचिव
सम्पादक मण्डल
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ0 अनिल कुमार विश्वा
डॉ0 राज नारायण पाण्डेय
संकलन एवं सम्पादन
रजनीश सौरभ, शिवाकर,
राजेश एवं साक्षी

Feedback
avadhabhivyakti@gmail.com

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

एलुमनाई का धर्म होता है लर्न, अर्न एण्ड रिटर्नः कुलपति

01 मई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के आई0ई0टी0 संस्थान में "फ्यूचर बिल्ड टुगेदर" विषय पर ऑनलाइन द्वितीय एलुमनाई मीट का आयोजन किया गया।

ऑनलाइन एलुमनाई मीट की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि कोविड–19 के कारण लॉकडाउन में भारतीय जनमानस को समझने की जरूरत है। लॉकडाउन की शुरुआत जनता कर्फ्यू से हुई और आज भी हम लॉकडाउन का पालन कर रहे हैं। कुलपति ने कहा कि वे प्रवासी जो राज्य के बाहर कमाने गए थे, सरकार के सहयोग से अपने घरों को लौट रहे हैं। जिससे हम सभी को एक सीख मिलती है कि परिवार सबसे बड़ी ताकत और संबल है। कुलपति ने कहा कि एलुमनाई का धर्म होता है लर्न, अर्न एण्ड रिटर्न। आज जरूरत है कि इस संस्थान से आपने जो ग्रहण किया है उसका उपयोग इस विषम परि–स्थिति में देश के लिए करें।

प्रो0 दीक्षित ने पुराण के एक श्लोक का दृष्टांत देते हुए कहा कि आज जो वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाइजेशन और भारत सरकार की गाइड लाइन्स कोविड–19 से बचाव के लिए दी गई है उसका वर्णन हमारे ग्रंथो में पहले से ही वर्णित है। कुलपति ने बताया कि आज समय है, रिवर्स इंजीनियरिंग और रि–अंडरस्टैंडिंग का। आज के परिप्रेक्ष्य में विश्व का सबसे विकसित देश अमेरिका, जो दंभ भरता था कि किसी भी महामारी और परिस्थिति से निपट सकता है, लेकिन आज पूरी तरीके से असफल हो चुका है। पूरा विश्व आज भारत की ओर देख रहा है। हम अपनी संस्कृति, रहन–सहन और खान–पान के चलते कोरोना से लड़ने में सफल हो रहे हैं। भारत में आज सोशल रिस्पांस देखने को मिल रहा है और हेल्थ सेक्टर एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें भारत में टूरिज्म के बाद सबसे ज्यादा अवसर है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इंजीनियर अभय पांडेय, चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर, सऊदी अरब अमीरात ने कहा कि कोरोना महामारी में वर्क फ्रॉम होम किया जा रहा है और शैक्षिक कार्य भी ऑनलाइन हो रहा है। आज हमारे सामने तकनीकी रूप से चैलेंज है, साइबर सिक्योरिटी, आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग के प्रयोग और इसे कस्टमर तक पहुंचाने और आम आदमी को जोड़ने का। मर्सिडेंज कंपनी, बंगलुरु के रवि प्रकाश तिवारी ने संस्थान के छात्रों के लिए प्रतिबद्धता जताई एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। आर्डिनेंस फैक्ट्री भारत सरकार के पी0 प्रकाश ने छात्रों को आर्डिनेंस फैक्ट्री में ट्रेनिंग एवं अनुबंध कराने की बात कही।

पुरातन छात्र विनोद यादव, एस0डी0, बी0एस0एन0एल0 ने बताया कि उनके द्वारा ऑप्टिकल फाइबर पर कार्य किया जा रहा है जिसमें संस्थान के छात्रों को ट्रेनिंग दिलाएंगे। अमेरिका में अध्ययनरत संस्थान के छात्र शिवम त्यागी ने संस्थान के छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित किया और बताया कि कोविड–19 के समय सभी को अपनी शैक्षिक क्षमता को बढ़ाना चाहिए। विश्वविद्यालय कार्यपरिषद के सदस्य ओमप्रकाश सिंह ने कहा कि कोरोना महामारी से लड़ने में ग्रामीणों को जागरूक करने की आवश्यकता है।

एलुमनाई मीट में 200 से अधिक पुरातन छात्रों ने प्रतिभाग किया। एलुमनाई का स्वागत संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र द्वारा किया गया। कार्यक्रम के सचिव इं0 रमेश मिश्र ने अतिथियों के प्रति धन्य–वाद ज्ञापित किया। तकनीकी सत्र का संचालन इं0 पारितोष त्रिपाठी, संजीत पांडेय, डॉ0 बृजेश भारद्वाज द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ0 वन्दिता पाण्डेय, इं0 विनीत सिंह, इं0 कौशल किशोर, इं0उमेश वर्मा, इं0 आशुतोष मिश्र, इं0 आस्था कुशवाहा सहित बड़ी संख्या में शिक्षक एवं छात्र–छात्राएं ऑनलाइन जुड़े रहे।

चुनौतियों को अवसर के रूप में बदलना होगाः प्रो0 दीक्षित

05 मई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय लॉकडाउन के तृतीय चरण के दृष्टिगत शैक्षणिक गतिविधियों व कोविड–19 से बचाव के लिए कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित के दिशा निर्देशन में विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राएं सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़कर अपना योगदान दे रहे हैं। सामाजिक जागरूकता के साथ–साथ आसपास के क्षेत्रों में मास्क वितरण, साफ–सफाई और सोशल डिस्टेंसिंग पर व्यापक अभियान चला रहे हैं। आरोग्य सेतु एप से प्राप्त महत्वपूर्ण जानकारियों और बचाव के लिए आम जनमानस को इस ऐप से होने वाले लाभ से परिचित भी करा रहे हैं। कोविड–19 के संक्रमण से बचाव का सशक्त माध्यम जागरूकता है।

कुलपति प्रो0 दीक्षित ने कोविड–19 की चुनौतियों को एक सशक्त अवसर के रूप में बदलकर कार्य करने प्रणाली को अपनाने को कहा है। इस महामारी से विश्व स्तर पर जो सामाजिक, आर्थिक एवं औद्योगिक परिवर्तन होने जा रहा है, इससे हम सभी प्रभावित होंगे। परंतु इसी चुनौती के बीच कई ऐसे महत्वपूर्ण क्षेत्र उभर कर आएंगे, जो निश्चित रूप से सफलता के नए मानकों को स्थापित करेंगे। भारत अपने सांस्कृतिक सामर्थ्य के बलबूते पूरी दुनिया में यह संदेश देने के लिए सक्षम होगा कि भारतवासी चुनौतियों को एक अवसर के रूप में बदलने के लिए तैयार हैं। विश्वविद्यालय शिक्षण प्रशिक्षण को लेकर प्रभावी तकनीक पर मंथन कर रहा है। छात्र हितों को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक उपाय भी किए जा रहे हैं, जिससे पठन–पाठन प्रभावित न हो। कुलपति ने सभी छात्र–छात्राओं से अपील की है कि इस अवसर में स्वयं को सशक्त कर अपने कैरियर को एक नई दिशा दें।

नए सत्र से परिसर में गर्भ संस्कार एवं कोरियन भाषा में सर्टिफिकेट कोर्स

12 मई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के परिसर में गर्भ संस्कार एवं कोरियन भाषा में सर्टिफिकेट कोर्स शुरू होने जा रहा है। इस सम्बन्ध में प्रवेश समिति–2020 की ऑनलाइन बैठक हुई। प्रवेश समिति–2020 के समन्वयक प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित के निर्देश के क्रम में महामहिम कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल के निर्देश पर विश्वविद्यालय में गर्भ संस्कार विषय में 03 माह का सर्टिफिकेट कोर्स एवं कोरियन भाषा में 06 माह की अवधि के नए पाठयक्रम इस सत्र से प्रारम्भ किये जा रहे हैं। इन दोनों पाठ्यक्रमों में प्रवेश की अधिसूचना विज्ञापित किए जाने का निर्णय लिया गया।

बैठक में कुछ पाठ्यक्रमों में वार्षिक शुल्क में भिन्नता के सम्बन्ध में कुलपति को संज्ञानित कर सक्षम समिति के माध्यम से निस्तारित कराने का अनुरोध किए जाने पर सहमति बनी है। प्रवेश विवरणिका को शीघ्र विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड कर दिया जायेगा। बैठक में उप समन्वयक डॉ0 शैलेंद्र कुमार, डॉ0 डी0एन0 वर्मा, डॉ0 अनिल कुमार, डॉ0 अभिषेक सिंह, प्रोग्रामर रवि मालवीय, विष्णु यादव एवं सुभाष कुमार विश्वकर्मा उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों को प्रदान की जा रही ई–लर्निंग

17 अप्रैल। कोविड–19 से निपटने के लिए देशव्यापी लॉकडाउन में डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित के निर्देशन में परिसर के शिक्षकों ने शैक्षिक गतिविधियों को बनाये रखा है।

आवसीय परिसर एवं आई0ई0टी0 संस्थान के छात्र–छात्राओं को शिक्षकों द्वारा जूम एप, गूगल क्लास, वेबसाइट, ई–मेल एवं व्हाट्सएप से ई–कंटेंट उपलब्ध कराया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अन्य विभागों द्वारा वेबिनार का आयोजन भी किया गया। इस क्रम में कुलपति ने पूर्व की बैठक में विभागाध्यक्षों, निदेशकों एवं समन्वयकों को अपने विभागों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के डेटाबेस तैयार कर, उन्हें ई–कंटेंट उपलब्ध कराये जाने का आदेश प्रदान किया था। उसी का पालन करते हुए शिक्षक प्रतिदिन पाठ्यक्रम वार निर्मित व्हाट्सएप ग्रुप एवं ई–मेल के माध्यम से ई–लर्निंग कंटेंट प्रेषित कर छात्र–छात्राओं को प्रायोगिक कार्यों के लिए टास्क दे रहे है। छात्र टास्क को पूरा कर अपने संबंधित ग्रुप में भी भेज रहे हैं। विभागाध्यक्ष इस संपूर्ण प्रक्रिया पर स्वयं या किसी नामित विभागीय शिक्षक के माध्यम से निगरानी भी कर रहे हैं।

परिसर के समस्त शिक्षकों द्वारा विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर पाठ्यक्रमवार प्रश्न–पत्रों को छात्रों के लिए ई–रिसोर्सेज या ई–कंटेंट के द्वारा उपलब्ध कराया जा रहा है। इसके अतिरिक्त केंद्रीय स्तर पर संचालित ई–लर्निंग वेब लिंक या स्वयं प्रभा ऑनलाइन कोर्स, पीजी मूक्स, ई–पीजी पाठशाला, ई–कंटेंट कोर्सवेयर इन यूजी, नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी, शोधगंगा तथा ई–शोध सिंधु के लिंक भी व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से छात्र–छात्राओं को बताये जा रहे हैं। परिसर के शिक्षकों द्वारा कराई जा रही ई–लर्निंग में छात्र रूचि ले रहे हैं और अपनी जिज्ञासा का समाधान भी कर रहे हैं।

परिसर की छात्राएं मास्क बनाकर करेंगी वितरण

15 अप्रैल। कोरोना वायरस की महामारी से निपटने के लिए डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के प्रौढ़, सतत एवं प्रसार शिक्षा विभाग के शिक्षक और विद्यार्थियों ने भी मास्क बनाकर सहयोग प्रदान करने का संकल्प लिया है। हर दिन एक शिक्षक और फैशन एवं डिजाइनिंग पाठ्यक्रम की छात्राएं मास्क बनाकर विभाग को उपलब्ध करायेंगी। प्रतिदिन लगभग 250 से 300 मास्क बनेंगे।

विदित हो कि प्रौढ़, सतत एवं प्रसार शिक्षा विभाग ने सामुदायिक सेवा के तहत 11 गांव और मंडलीय कारागार, अयोध्या को गोद लिया हुआ है। तैयार मास्क को इन गांवो और मंडलीय कारागार में प्रशासन के सहयोग से समाज के गरीब वर्गों एवं जरूरत मंद लोगों में निःशुल्क वितरित किया जायेगा। इसके साथ ही विश्वविद्यालय के शिक्षक व कर्मचारियों की कॉलोनियों में भी मास्क वितरित किया जाएगा। मास्क बनाने एवं वितरण के संदर्भ में प्रौढ़, सतत एवं प्रसार शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ0 अनूप कुमार एवं सहायक निदेशक डॉ0 सुरेंद्र मिश्र ने बताया कि मास्क बनाने का कार्य प्रारम्भ हो गया है। इसमें फैशन एवं डिजाइनिंग के स्नातक और पी0जी0 डिप्लोमा के विद्यार्थियों के सहयोग से विभाग प्रतिदिन 250–300 मास्क बनाकर वितरित करेगा।

आवासीय परिसर के पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रारम्भ

01 मई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के आवासीय परिसर में संचालित सभी पाठ्यक्रमों में शैक्षणिक सत्र 2020–21 में प्रवेश की ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया दिनांक 25 अप्रैल, 2020 से प्रारम्भ कर दी गयी है। स्नातक पाठ्यक्रमों में ऑनलाइन आवेदन 27 जून, 2020 तक कर सकेंगे। अभ्यर्थियों को स्नातक पाठ्यक्रम के लिए शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि 25 जून, 2020 निर्धारित है। परास्नातक पाठ्यक्रम के लिए अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन 30 जून, 2020 तक कर सकेंगे। आवेदन शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि 28 जून, 2020 निर्धारित की गई है।

आवासीय परिसर में संचालित कला संकाय के अर्न्तगत स्नातक पाठ्यक्रमों में फाइन आर्टस, बी0पी0ई0एस0, बी0 लिब0 आई0एस0सी0, सोशल वर्क, जैनोलॉजी एवं विज्ञान संकाय के तहत स्नातक में बी0एस0सी0 (फिजिक्स, मैथ, इलेक्ट्रानिक्स), (फिजिक्स, मैथ, कमेस्ट्री), (फिजिक्स, मैथ, कम्प्यूटर साइंस), (माइक्रोबायोलॉजी, बायोकेमेस्ट्री केमेस्ट्री), (माइक्रोबायोलॉजी, केमेस्ट्री, इन्वायरमेंट साइंस), बी0सी0ए0 तथा कामर्स स्नातक के अर्न्तगत बी0बी0ए0 है। परिसर के परास्नातक पाठ्यक्रमों में एम0ए0 अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास, एम0ए0 इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व, एम0ए0 प्रसार शिक्षा एवं ग्रामीण विकास, एम0ए0 जनसंचार एवं पत्रकारिता, मास्टर ऑफ सोशल वर्क, मास्टर ऑफ टूरिज्म एडमिनिस्ट्रेशन, मास्टर ऑफ पब्लिक हेल्थ, मास्टर ऑफ फाइन आर्ट्स(पेंटिग), एम0ए0 योगा थिरेपी, मास्टर इन लाइब्रेरी एण्ड इन्फॉर्मेशन साइंस, मास्टर ऑफ परफॉर्मिंग, एम0ए0 गवर्नेंस इन पब्लिक पॉलिसी, एम0ए0 हिन्दी, एम0ए0 इंग्लिश, एम0ए0 सिन्धी, एम0ए0 एप्लाइड साइकोलॉजी, एम0ए0 जैनोलॉजी, एम0फिल0 इन सोशल वर्क है। विधि संकाय के तहत एल0एल0एम0 पाठ्यक्रम है।

विज्ञान संकाय के परास्नातक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत एम0एस0सी0 मैथ एण्ड स्टेटिक्स, एम0एस0सी0 फिजिक्स (इलेक्ट्रानिक्स), एम0एस0सी0 बायोकमेस्ट्री, एम0एस0सी0 इन्वायरमेंट साइंस, एम0एस0सी0 माइक्रोबायोलॉजी, एम0एस0सी0 इलेक्ट्रानिक्स, एम0एस0सी0 बायोटेक्नोलॉजी, एम0एस0सी0 जियोग्राफी, एवं एम0एस0सी0 जियोलॉजी है। कामर्स के अर्न्तगत मास्टर ऑफ बिजनेस फाइनान्स एण्ड कंट्रोल, मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन इन एग्री बिजनेस, मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन हॉस्पिटलिटी मैनेजमेंट, मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन टूरिज्म मैनेजमेंट हैं।

परिसर में संचालित वोकेशनल पाठ्यक्रमों (स्नातक स्तर) में बी0वोक0 जनसंचार एवं पत्रकारिता, बी0वोक0 इन टूरिज्म एण्ड हॉस्पिटलिटी, बी0वोक0 इन फैशन डिजाइन एण्ड गारमेंट टेक्नोलॉजी, बी0वोक0 इन बैचलर ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट शामिल हैं। पी0जी0 डिप्लोमा पाठ्यक्रम के तहत वी0एल0एस0आई0 डिजाइन, फैशन डिजाइनिंग(केवल महिलाओं हेतु), एरोमा टेक्नोलॉजी, योगा एण्ड ऑप्शनल थिरेपी शामिल हैं। अन्य व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में (विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महा–विद्यालय) में बी0पी0एड0, एम0पी0एड, एम0एड0, एल0एल0बी0(त्रिवर्षीय एवं पंचवर्षीय केवल सम्बद्ध महाविद्यालयों हेतु) हैं।

यू0पी0एस0ई0ई0–2020 के माध्यम से बी0टेक0 इन मेकेनिकल इंजीनियरिंग, बी0टेक0 इन कम्प्यूटर साइंस, बी0टेक0 इन इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी, बी0टेक0 इन इलेक्ट्रानिक्स कम्युनिकेशन, बी0टेक0 इन सिविल इंजीनियरिंग, बी0टेक0 इन इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग तथा एम0टेक0 इन मेकेनिकल इंजीनियरिंग, एम0टेक0 इन कम्प्यूटर साइंस इंजीनियरिंग, एम0टेक0 इन इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी, एम0टेक0 इन इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कम्युनिकेशन, मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन, मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में प्रवेश दिए जाएंगे।

आवासीय परिसर प्रवेश परीक्षा–2020 के समन्वयक प्रो0 विनोद श्रीवास्तव ने बताया कि आवासीय परिसर में संचालित सभी पाठ्यक्रमों में आवेदन को देखते हुए प्रवेश परीक्षा करायी जायेगी, जिसकी सूचना विश्वविद्यालय की अधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध रहेगी। परिसर में संचालित सभी पाठ्यक्रमों में अधिकतम 05 सीटें सेवारत सैनिकों/अधिकारियों के लिए आरक्षित होगी। प्रवेश के लिए आवेदन–पत्र, सूचना, अर्हता एवं दिशा–निर्देश विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.rmlauentrance.in पर उपलब्ध है।

•विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों की बी0काम0 भाग तीन मुख्य परीक्षा–2020 का परीक्षाफल 14 मई, 2020 को घोषित किया गया।

•मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा "स्मार्ट इंडिया हैकथॉन –2020 सॉफ्टवेयर एडिशन" कार्यक्रम के ग्रैंड फिनाले (18 व 19 जुलाई 2020) के लिए अवध विश्वविद्यालय के आई0ई0टी0 संस्थान को नोडल केन्द्र बनाया गया।

•अवध विश्वविद्यालय प्लेसमेंट सेल व फर्स्ट नौकरी, नोएडा के संयुक्त प्रयास से 15 अप्रैल, 2020 को विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं के ऑनलाइन प्री–प्लेसमेंट का आयोजन किया गया।

•आई0ई0टी0 द्वारा कोविड–19 के संक्रमण से बचाव के लिए दिनांक 23 से 29 अप्रैल, 2020 तक जन जागरूकता के लिए ऑनलाइन सैनिटाइजेशन वीक का आयोजन किया गया।

क्या तन मांजता रे, एक दिन माटी में मिल जाना...

11 मई । बेगम अख्तर अखिल भारतीय संगीत कला अकादमी तथा अभिनय कला विभाग आवासीय परिसर डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय एवं आई0ई0टी संस्थान के तकनीकी सहयोग से कोविड–19 कोरोना के योद्धाओं का उत्साहवर्धन एवं लॉकडाउन का पालन करने वाले समस्त देशवासियों के सम्मान में ई–सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया।

सांस्कृतिक संध्या का शुभारम्भ लखनऊ की सयाली पाण्डेय ने कोरोना वारियर्स के लिए ये हौसला कैसे झुके, ये आरजू कैसे रूके ... गीत गाकर उनका उत्साहवर्धन किया। साथ ही जाने क्यों आज तेरे नाम पर रोना आया... गीत से श्रोताओं और दर्शकों का मनमोह लिया। लखनऊ की काजल अग्निहोत्री ने सत्यम शिवम सुन्दरम... गीत गाकर सबका ध्यान आकर्षित किया। गायक आदर्श ने मधुर राम भजन सुनाया तथा कबीर की वाणी, क्या तन मांजता रे, एक दिन माटी में मिल जाना... गाकर सबको भावुक कर दिया। युवा कलाकर स्वास्तिक भारद्वाज ने मदर्स डे पर हे मां तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी... गीत गाया। गोरखपुर के अनुपम मुखर्जी ने कोरोना वारियर्स के लिए एक बहुत ही सुन्दर गीत प्रस्तुत किया, जिसके बोल थे जग से हारा नहीं, मैं खुद से हारा हूं मां....माई तेरी चुनरियां लहराई। मुम्बई से युवी सिंगर ने तेरे मस्त–मस्त दो नैन... और जो ख्वाबों ख्यालों में... गीत गाये। इसी क्रम में आकाश दूबे, नरेन्द्र सक्सेना, मुकेश दा, मुन्ना सहारा, स्ने. हलता, रामपाल निषाद, पूजा निषाद, मुनिरमन श्रीवास्तव, अयोध्या घराने की शान मानस महाराज, वरूण कनौजिया, शिवेन्द्र, कौशलेन्द्र, अनिल मल्होत्रा ने भी अपनी प्रस्तुति से श्रोताओं का मनमोह लिया।

सांस्कृतिक संध्या में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि संगीत एक ऐसी विधा है, जो हर सुनने वाला चाहे जिस बोली या भाषा का हो, समझ लेता है। प्रो0 दीक्षित ने कहा कि यह कार्यक्रम एक अच्छा प्रयास है। संगीत तनाव को दूर करने का बेहतरीन उपक्रम है। आगे भी संगीत सभा की लम्बी श्रंखला बनाई जा सकती है। इंग्लैण्ड से जुड़े पंकज पाण्डेय ने कहा कि यह कार्यक्रम अपनी माटी से जुड़ने का सर्वोत्तम प्रयास है और कुछ अंतराल पर यह होते रहना चाहिए। अमेरिका से अखिल मिश्र ने कहा कि माटी की महक ने आज हमको जल्दी उठा दिया। अमेरिका और भारतीय समय में दिनरात का फर्क होता है। उन्होंने कहा कि मैं यह कार्यक्रम देख सुनकर तनाव मुक्त हो गया। आबूधाबी से विवेक तिवारी ने कहा कि आज मातृ दिवस के अवसर पर इस कार्यक्रम ने भारत मां की याद दिलाई। मां और भारत मां दोनो की याद में आंखें नम हो गई।

इस अवसर पर बेगम अख्तर अखिल भारतीय संगीत कला अकादमी के सलाहकार सदस्य ओम प्रकाश सिंह, समन्वयक प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 आर0एन0 राय, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, राष्ट्रीय सहारा, नई दिल्ली से वरिष्ठ पत्रकार डॉ0 अरूण पाण्डेय, डॉ0 रजनीश सिंह, डॉ0 संजीत पाण्डेय, सहित अन्य उत्साहवर्धन करते रहे। तकनीकी संचालन में इं0 पारितोष त्रिपाठी, इं0 रमेश मिश्र और इं0 विनीत सिंह का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन बेगम अख्तर अखिल भारतीय संगीत कला अकादमी के सलाहकार सदस्य जनार्दन पाण्डेय ने किया।

लॉकडाउन में वर्चुअल लैब शिक्षा जगत का क्रांतिकारी प्रयोग है: प्रो0 शर्मा

17 अप्रैल। देशव्यापी लॉकडाउन में शैक्षिक गतिविधियों को बनाये रखने के उद्देश्य से डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में आज 16–17 अप्रैल, 2020 को दो दिवसीय 'वेबिनार ऑन वर्चुअल लैब' का आयोजन किया गया।

वेबिनार को संबोधित करते हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि कोरोना वायरस के कारण देश बहुत सी परेशानियों से गुजर रहा है। इसलिए सभी से अपील है कि सभी लोग अपने घरों में रहे, लॉकडाउन का पूर्णतया पालन करें। कुलपति ने छात्र–छात्राओं की पढ़ाई के सम्बन्ध में कहा कि इनकी पढ़ाई के लिए शिक्षक व्हाट्सएप, फेसबुक तथा गूगल क्लासरूम के माध्यम से लेक्चर व नोट्स उपलब्ध करा रहे हैं। लेकिन यह भी ध्यान देने की बात है कि कैसे हम विद्यार्थियों को उनके घर पर ही प्रैक्टिकल्स की सुविधा उपलब्ध करा सकें। इस विषय पर गंभीरता से चर्चा करने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एमिटी विश्वविद्यालय, गुरूग्रम के कुलपति प्रो0 पी0 बी0 शर्मा ने कहा कि लॉकडाउन में वर्चुअल लैब शिक्षा जगत का क्रांतिकारी प्रयोग है। वर्चुअल लैब में छात्र–छात्राएं बड़े आसानी से ऑनलाइन अपने प्रयोगात्मक कार्य कर सकते हैं। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ0 अनिल कुमार स्टेट प्रोजेक्ट इम्प्लीमेंटेशन यूनिट, लखनऊ, द्वारा कार्यक्रम में आने वाले समस्त विशेषज्ञों के बारे में जानकारी दी गई। प्रो0 पी0 एम0 खोडगे, नेशनल प्रोजेक्ट इम्प्लिमेंटेशन यूनिट, दिल्ली ने वेबिनार की सराहना करते हुए आज के समय का क्रांतिकारी कदम बताया। विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो0 एस0एन0 शुक्ल ने बताया कि वर्चुअल लेबोरेटरी के सॉफ्टवेयर द्वारा कोई भी छात्र अपने समस्त टूल्स को देख सकता है और उस पर कार्य कर सकता है। एस0पी0आई0यू0, लखनऊ के डॉ0 महावीर सिंह नरूका ने बताया कि वर्तमान समय में वर्चुअल लैब बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। कार्यक्रम की शुरुआत आई0ई0टी0 के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने दो दिवसीय कार्यक्रम के बारे में लोगों को अवगत कराते हुए उसके प्रयोजन पर प्रकाश डाला।

वेबिनार के प्रथम सत्र में प्रो0 कमतेज बल्ला आई0आई0टी0 कानपुर ने पीपीटी के माध्यम से वर्चुअल लैब की जानकारी दी। राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, बांदा के डॉ0 आशुतोष तिवारी ने वर्चुअल लैब पर कैसे काम करें और कैसे–कैसे सर्किट को डिजाइन किया जाए, उसका आउटपुट कैसे देखा जाए, इसके बारे में बताया। प्रो0 राहुल स्वरूप, आगरा विश्वविद्यालय ने कैसे वर्चुअल लेबोरेटरी पर सिमुलेशन का इस्तेमाल किया जाए इसके बारे में पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुति दी। द्वितीय सत्र में प्रो0आर0के0 उपाध्याय, एच0सी0एस0टी0 मथुरा द्वारा जानकारी दी गई कि वर्चुअल लेबोरेट्री में अलग–अलग विभागों के लैब को कैसे खोजना है और उन लोगों में किस तरह के एप्लीकेशन का इस्तेमाल होगा। विनय अग्रवाल, नोवा टेक्नोलॉजी, बैंगलोर ने पीपीटी के माध्यम से समझाया कि कैसे वर्चुअल लेबोरेटरी के माध्यम से अलग–अलग टेक्नोलॉजी पर रिसर्च की जा सकती है। प्रो0 राजन बोस, आई0आई0आई0टी0, दिल्ली नेशनल कोऑर्डिनेटर ने वर्चुअल लैब की प्रस्तुति दी और बताया कि वर्चुअल लैब किस तरह से विद्यार्थियों के लिए अत्यधिक उपयोगी है और इस पर विभिन्न विभागों के विद्यार्थी एक साथ बैठकर काम कर सकते हैं।

वेबीनार के दूसरे दिन समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ0 भीमराव अंबेडकर इंस्टीट्यूट बेंगलुरु के प्रो0 महालिंगा मंडी ने प्रतिभागियों को विषय में विस्तार से बताया और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रयोग किए जा रहे सॉफ्टवेयर व स्लैब के लिए आवश्यक प्लेटफॉर्म एवं हार्डवेयर के विभिन्न स्वरूपों के महत्त्व को भी रेखांकित किया। बेंगलुरु के प्रो0 शिवपुत्र ने प्रतिभागियों को वर्चुअल लैब के फंडामेंटल ऑपरेशन एवं मेथड्स और लिमिटेशंस के बारे में ऑनलाइन डेमो के जरिए आवश्यक जानकारी प्रस्तुत की।

वेबीनार के समापन पर मुख्य अतिथि प्रो0 महालिंगा मंडी व संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र द्वारा प्रतिभागियों को ऑनलाइन प्रतिभाग प्रमाण पत्र सौंपा गया। कार्यक्रम का संचालन इं0 संजीत पांडे, इं0 परितोष त्रिपाठी एवं इं0 विनीत सिंह द्वारा किया गया।

उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन कार्य जारी

12 मई। कोविड–19 के संक्रमण की वजह से देशव्यापी लॉकडाउन में डॉ0 रामनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में मुख्य परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन कार्य गति पकड़ने लगा है। इस सम्बन्ध में विश्वविद्यालय द्वारा केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा कोरोना के सम्बन्ध में जारी एडवाइजरी का अनुपालन करते हुए परीक्षकों से मूल्यांकन कार्य करवाया जा रहा है। मूल्यांकन में लगे परीक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को थर्मल स्कैनिंग के उपरांत ही प्रवेश दिया जा रहा है। इसके साथ ही मास्क व सेनिटाइजर का अनिवार्य रूप से प्रयोग एवं सोशल डिस्टेसिंग बनाते हुए मूल्याकंन का कार्य कराया जा रहा है।

विश्वविद्यालय में केन्द्रीय मूल्यांकन कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित के निर्देश पर 08 मई, 2020 से कराया जा रहा है। लॉकडाउन को देखते हुए जिला प्रशासन की अनुमति पर अभी अयोध्या जनपद के परीक्षकों को लगाया है।

तकनीक के बिना भविष्य की कल्पना संभव नहीं : प्रो0 प्रसाद

11 मई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के तकनीकी संस्थान में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ0 भीमराव आम्बेडकर इंस्टीट्यूट, बंगलुरू के प्रो0 नंदनी प्रसाद ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर होने वाले कार्यक्रम को विज्ञान और टेक्नोलॉजी से जुड़े लोगों के लिए लाभदायक बताया। प्रो0 प्रसाद ने बताया कि तकनीक के बिना भविष्य की कल्पना करना संभव नहीं है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने कहा वर्तमान समय में टेक्नोलॉजी विस्तार हमारे जीवन का अभिन्न अंग बनता जा रहा है। डॉ0 बृजेश भारद्वाज ने कहा कि हमारा देश उन सभी लोगों को सलाम करता है जो प्रौद्योगिकी के द्वारा दूसरे लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रहे है। इं0 विनीत सिंह ने प्रौद्योगिकी दिवस के महत्व एवं इतिहास पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर संस्थान के शिक्षक एवं छात्र–छात्राएं ऑनलाइन जुड़े रहे।

भारत की जनसंख्या अर्थव्यवस्था के लिए बड़ी चुनौती है: प्रो0 राव

05 मई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के व्यवसाय प्रबंध एवं तकनीकी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में "पोस्ट कोविड बिजनेस अपॉर्चुनिटी इन इंडिया विथ लेसन फ्रॉम 1918 पैंडेमिक" विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया।

वेबिनार के मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 नागेश्वर राव ने कहा कि भारत की जनसंख्या अर्थव्यवस्था के लिए बड़ी चुनौती है। उन्होंने कहा कि ऑनलाइन पढ़ाई का स्वरुप शुरुआती दौर में है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि लॉकडाउन के बाद भी कोरोना से बचाव की दिनचर्या अपनानी होगी।विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो0 एस0एन0 शुक्ल ने कहा कि मौजूदा परिस्थिति नए अवसरों को भी जन्म देने वाली है। उन्होंने अफ्रीका में शिू कंपनी के द्वारा किए गए सर्वे का उदाहरण भी दिया।

कुमाऊं विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो0 डी0के0 नौटियाल ने कहा कि कोरोना, वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ी चुनौती है। आई0एस0एम0 धनबाद के प्रो. प्रमोद पाठक ने कहा कि कोरोना के प्रभाव को कम करने के लिए नए बिजनेस मॉडल बनाने होंगे। वेबिनार संयोजक प्रो. अशोक शुक्ल ने कहा कि यह दौर नई अर्थव्यवस्था को जन्म देने वाला है, जिसमें आने वाले दिनों में वैश्विक रूप से भारत महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। आई0एम0एस0 बी0एच0यू0 के निदेशक प्रो0 सुजीत दूबे ने कहा कि ऑनलाइन व्यवस्था में मानव संसाधन का प्रयोग कम होगा और तकनीकी रूप से दक्ष लोगों की मांग बढ़ेगी। ऑनलाइन व्यवस्था में साइबर सिक्योरिटी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आदि पर गहन विचार–विमर्श की आवश्यकता है।

आई0एम0एस0 बी0एच0यू0 के संकायाध्यक्ष प्रो0 पी0एस0 त्रिपाठी ने 1918 में आई महामारी व वर्तमान व्यवसाय के स्वरुप एवं कार्यप्रणाली पर चर्चा की। पूर्वांचल विश्वविद्यालय के प्रो0 अजीत शुक्ला कहा कि लॉकडाउन नए बिजनेस मॉडल का प्रारंभिक टूल है। गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्रो0 ए0के0 तिवारी ने कहा कि वर्तमान स्थिति भारतीय अर्थव्यस्था के लिए चिंताजनक है। पूर्वांचल विश्वविद्यालय के प्रो0 अविनाश ने कहाकि आने वाले दो वर्ष पूरे विश्व के लिए महत्वपूर्ण होंगे। पूर्वांचल विश्वविद्यालय के प्रो0 मनोज पांडेय ने छोटे उद्यमियों को बढ़ावा देने की वकालत की।

अतिथियों का स्वागत तकनीकी संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने किया। वेबिनार में कुलानुशासक प्रो0 आर0एन0 राय, वेबिनार के सचिव प्रो0 हिमांशु शेखर, डॉ0 शैलेंद्र वर्मा, कपिलदेव चौरसिया, डॉ0 ए0के0 पांडेय, विवेक उपाध्याय, रविंद्र भारद्वाज, रमेश मिश्र, पारितोष त्रिपाठी, विनीत सिंह आदि उपस्थित रहे।